15/1

दृष्टि The Vision

Permission for Previous Test
Nehru Vihar
10/9/17

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL4**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अरविन्द प्रताप सिंह

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 5 0 6 0 7 3

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): अरविन्द

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

प्रयास अच्छा है

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 132

टिप्पणी (Remarks): सतत अभ्यास अपेक्षित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) हरिमुख निरखि निमेख बिसारे।
ता दिन तें मनो भए दिगंबर इन नैनन के तारे।।
घूँघटपट छाँड़े बीथिन महँ अहनिसि अटत उघारे।।
सहज समाधि रूपरुचि इकटक टरत न टक तें टारे।।
सूर, सुमति समुझति, जिय जानति, ऊधो! बचन तिहारे।
करै कहा ये कह्यों न मानत लोचन हठी हमारे।।

सूरदास का 'भ्रमरगीतसार' गोपियों के भावुक प्रेम, विरह, वाग्विदग्धता और ग्रामीण सरलता का अद्भुत संगम है। प्रस्तुत पद में गोपियाँ उद्धव को अपने सरल तर्कों से कृष्ण-प्रेम का महत्त्व समझाने का प्रयत्न कर रही हैं।

गोपियाँ उद्धव से कह रही हैं कि तुम्हारे ज्ञानपूर्ण वचनों को हम समझते हैं परन्तु हमारे ये नेत्र ही हमारे वश में नहीं हैं। जिस दिन से इन्होंने कृष्णमुख को देखा है, उन्होंने अपलक नेत्रों ने पलक झपकाना ही बंद किया हुआ है। जैसे लोग प्रेम में लाज-शर्म का त्याग कर देते हैं और सामाजिक भय से अप्रभावित रहते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वैसे ही इन नेत्रों ने पलक रूपी घूंघटपट का त्याग कर दिया है और रात-दिन उसी कृष्णरूप का स्मरण अपलक-एकटक करते रहते हैं। इन नेत्रों ने जैसे उस रूप में सहज-समाधि लगा ली हो।

हम तुम्हारी बातों को समझकर भी उस दिशा में अपने को बदल नहीं पा रहे हैं क्योंकि ये रही नेत्र हमारे ही वश में नहीं हैं।

साहित्यिक सौंदर्य :-

भाषा- साहित्यिक ब्रजभाषा
रस - विप्रलंभ शृंगार
छन्द - गेयपद
अलंकार - अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, उपमा (सहज समाधि की)

विशेष - सरल तर्कों के माध्यम से कृष्णप्रेम को ज्ञानमार्ग से श्रेष्ठ बताया गया है।
यही तर्क इस पद में भी है-
"ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयो स्यामसंग को आराधै ईस॥"

बहुत अ

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) फिरि फिरि चितु उत ही रहतु, टुटी लाज की लाव।
अंग-अंग-छबि-झौरैं मै भयौ भौरे की नाव।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि है। मध्यकालीन समाज का जिस बहुज्ञता से उन्होंने शृंगारयुक्त चित्रण किया है, वह अप्रतिम है। इस दोहे में बिहारी की उपरोक्त विशेषता को देखा जा सकता है, जो यहाँ 'बिहारी-रत्नाकर' (जगन्नाथ दास रत्नाकर द्वारा संपादित) से उद्धृत किया गया है।

नायिका अपनी सखी से कहती है कि मैं अपने चित्त को कितना भी समझाऊँ, वह बार-बार प्रियतम में ही जाकर लग जाता है क्योंकि मन को समझाने वाली लज्जा रूपी रस्सी अब टूट चुकी है।

प्रिय का प्रेम एक भँवर के समान है। मेरे अंग-अंग में उस प्रिय की छवि झलकती है और मैं उस भँवर में फँसी नाव की तरह हिचकोले खा रही हूँ। अर्थात् सामाजिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मर्यादा, लज्जा, कुलकानि सभी मुझे प्रियतम की ओर खिंचते जाने से रोकने में असमर्थ है।

साहित्यिक सौंदर्य

भाषा - साहित्यिक ब्रजभाषा

रस - श्रृंगार

छंद - दोहा

अलंकार - ~~[illegible]~~, रूपक, अनुप्रास

विशेष - बिहारी ने अन्यत्र भी प्रेम के आकर्षण और सामाजिक मर्यादा के मध्य के इस तनाव को रेखांकित किया है।

—x—

अच्छा

5 1/2 / 10

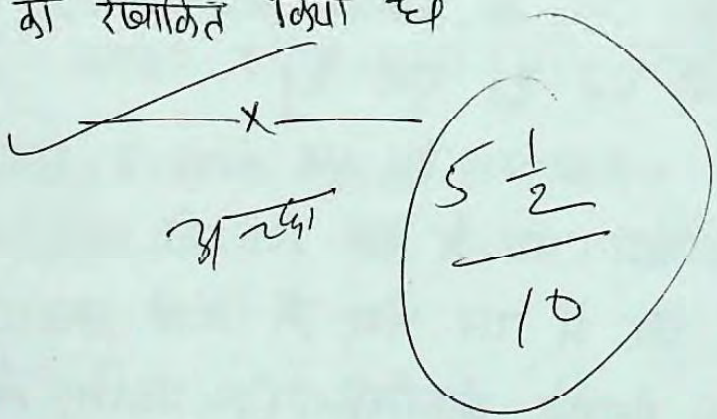

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त;
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निराला कृत 'राम की शक्तिपूजा' हिंदी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ लम्बी कविता के रूप में स्वीकृत है। यहाँ राम-रावण का नहीं अपितु सांकेतिक रूप में सत्य-असत्य का संघर्ष ही केंद्र में है।

राम द्वारा रावण-शक्ति सामंजस्य की चिंता ग्रस्त करने पर जाम्बवंत राम को सिद्धि और शक्ति की मौलिक कल्पना का मार्ग अपनाने को कहते हैं।

जाम्बवंत का मत है कि यदि रावण अशुद्ध होकर और असत्य का पक्ष लेकर भी शक्ति को धारण कर सकता है तो निश्चय ही आप इसे सिद्धि से प्राप्त करेंगे। पर संभव है कि सही सिद्धि की प्राप्ति के लिए और इस असत्यरूपी रावण को पराजित करने के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिए पुराने अस्त्र-शस्त्र और बने बनाए मार्ग काम न आए। अतः हे राम ! इस अधर्मी पर विजय प्राप्त करने के लिए समर में संलग्न रहने की बजाय आपको शक्ति की मौलिक कल्पना करनी चाहिए। यह मौलिकता ही इसका अंत करेगी।

सौन्दर्य भाषा - संस्कृतनिष्ठ तत्सम

रस - वीर रस

छंद - तुकांत

अलंकार - अनुप्रास

निराला पहले भी कहते हैं कि -

" आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर।

तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर।"

'शक्ति' की मौलिक कल्पना के निहितार्थ गंभीर और प्रासंगिक हैं।

———— x ————

अच्छा

5 1/2 / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।
दुःख की पिछली रजनी बीच विकसिता सुख का नवल प्रभात,
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसाद कृत 'कामायनी' में मानवता की विकास-यात्रा को कई अर्थों में व्याख्यायित किया गया है।

प्रस्तुत पद्यांश में, जो 'श्रद्धा' सर्ग से उद्धृत है, श्रद्धा और मनु का संवाद व्यक्त किया गया है। देव-सभ्यता के विनाश से अत्यंत शोक में डूबे मनु को श्रद्धा, आशा और नव-जीवन की बातों से उत्साहित करना चाहती है।

श्रद्धा मनु को समझाती है कि यह तो प्रकृति की लीला है, जिसमें निर्माण और ध्वंस का चक्र चलता रहता है। इस तथ्य को भूलकर असफलता और निराशा में डूब जाने का कोई अर्थ नहीं है।

दुःख-सुख के इस चक्र में जब दुःख

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की रात बीत जाती है तभी सुनहरी सवेरा आता है। यह जल जो चारो ओर एक नीले पर्दे के समान फैला है, यह अपने अंदर जाने कितने सुख रत्न छिपाए है। इन्हें खोजने के लिए आशावान होकर नई यात्रा प्रारम्भ करो।

सौंदर्य - भाषा - तत्सम
रस - शांत
अलंकार - अनुप्रास, रूपक

प्रसाद ने मानवता के विकास रूपी शुभ भावना को कामायनी में स्थान - स्थान पर व्यक्त किया है -

" सुख दुख विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।"

——X——

अच्छा 5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) "धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिये सदा ही किया शोध!
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।"
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निराला की 'राम की शक्तिपूजा' में सत्य-असत्य के वृहत्तर संघर्ष के अतिरिक्त एक व्यक्ति के रूप में राम का आंतरिक संघर्ष भी चित्रित हुआ है।

शक्ति को भी रावण के पक्ष में देखकर राम शक्ति की साधना में लीन होते हैं और विघ्न पड़ने पर स्वयं को धिक्कारते हैं कि इस जीवन में जो विरोध मेरे सम्मुख खड़े हैं वे मुझे उन मुक्ति-साधनों तक भी नहीं पहुंचने देते हैं। उनका एक मन तो कहता है कि अब संभवतः प्रिय जानकी का उद्धार न हो सके, परन्तु एक दूसरा मन बिना थके प्रयत्नशील रहता है।

इसी मन के माध्यम से अर्थात आंतरिक शक्ति के माध्यम से राम इस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बाधा को पार कर जाते हैं-

"वह एक और मन रहा राम का जो थका
जो नहीं जानता दैन्य नहीं जानता विनय
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय।"

साहित्यिक सौंदर्य : भाषा - संस्कृतनिष्ठ तत्सम
रस - उत्साह के भाव से वीर

विशेष - सीता की मुक्ति के माध्यम से केंद्रीय कथ्य की प्रस्तुति।

व्यक्ति-रूप में संशय को पार कर ही व्यक्ति को विजय मिलती है।

अच्छा

5 1/2 / 10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'राम की शक्ति पूजा' के आधार पर निराला की भक्ति-भावना का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निराला पर अद्वैतवाद, रामकृष्ण परमहंस-विवेकानंद की भावनाओं, बंगाल की शक्तिपूजा और हनुमान की योगी छवि का विशेष प्रभाव था। या यों कह सकते हैं 'राम की शक्तिपूजा' की रचना-काल तक वे उपरोक्त धार्मिक भावों से प्रभावित थे। जीवन के अंतिम वर्षों की तुलना में, जब वे प्रपत्ति-भाव की ओर आकर्षित हुए, इस कालखंड में उनमें उत्साह का भाव प्रत्यधिक था।

सनातन परम्परा में आस्थावश वे राम-रावण के युद्ध को सत्य और असत्य के रूप में प्रदर्शित करते हैं-

"रवि हुआ अस्त ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर॥"

वहीं हनुमान की छवि उनके मन में मात्र सेवक की नहीं अपितु ज्ञानी और योगी सेवक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की है। इसीलिए राम के अश्रु देखने पर वे योग के सूक्ष्म रूप में लोक-पर-लोक चढ़ते जाते हैं और तब शिव अपनी युक्ति से पार्वती के माध्यम से उन्हें शांत करवाते हैं।

अद्वैतवाद की मान्यताओं का छायावादी संस्करण हमें निराला की कविताओं में भी देखने को मिलता है। राम जब ध्यानलीन होने की प्रस्तावना करते हैं तो वे पर्वत, समुद्र और सम्पूर्ण प्रकृति को ही शक्ति के रूप में कल्पना कर ध्यान प्रारम्भ कर देते हैं। इस रूप में यहाँ अद्वैतवाद की इस मान्यता का अस्वीकार है जहाँ जगत को असत्य माना गया है।

बंगाल की शक्तिपूजा का प्रभाव भी यहाँ दृष्टव्य है स्वयं 'राम की शक्तिपूजा'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का मूलप्रसंग की 'कृत्तिवास रामायण' से लिया गया है। अधर्मी रावण ने शक्ति को अपने पक्ष में कर लिया है परन्तु राम अपने आराधन के माध्यम से इस शक्ति-संतुलन को बदलने का प्रयास करते हैं:

"आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर
तुम करो विजय संयत प्राणों से प्राणोंहर।"

अपनी त्याग-भावना और शक्ति की मौलिक कल्पना के माध्यम से राम ने शक्ति को भी अंततः अपने पक्ष में कर लिया-

"होगी जय होगी जय
है पुरुषोत्तम नवीन
कह महाशक्ति
राम के वदन में हुई लीन।"

परन्तु एक अद्वितीय कवि के रूप में निराला अपनी इस भक्तिभावना को कविता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के आख्यान-प्रवाह में बाधा नहीं बनने देते। सीता-मुक्ति, 'शक्ति की मौलिक कल्पना' या धर्म-विजय के केंद्रीय लक्ष्य में यह भक्ति-भावना सहायक बनकर ही प्रस्तुत हुई है

अच्छा प्रयास
और गहराई अपेक्षित
मॉडल उत्तर देखें

10/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) निराला के आत्मसंघर्ष के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शक्ति की मौलिक - कल्पना, सत्य - असत्य का संघर्ष, धर्म - अधर्म का युद्ध या सीता - मुक्ति के वृहत्तर अर्थों के अतिरिक्त 'राम की शक्ति पूजा' में एक व्यक्ति - रूप में स्वयं राम का संघर्ष भी व्यक्त हुआ है। वस्तुतः यह संघर्ष राम के साथ - साथ निराला का भी आत्मसंघर्ष है।

निराला आधुनिक समाज के उस बुद्धिजीवी साहित्यकार का प्रतीक हैं जो प्रशंसा तो पाता है, पर आर्थिक पक्ष पर कुछ विशेष नहीं मिलता। बौद्धिक रूप से वह यह भी देखता है कि पूरी व्यवस्था अधर्म शक्ति ही शक्तिशाली अधर्म के पक्ष में खड़ी है। एक साहित्यकार के रूप में यह भाव उन्हें बेचैन करता है। स्वयं राम भी देखते हैं कि-

"धिक जीवन जो पाता ही पाया विरोध
धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जानकी हाय उद्धार प्रिया का हो न सका।

यही भाव 'सरोज-स्मृति' में अपनी एकमात्र पुत्री के निधन पर निराला व्यक्त करते हैं:-

"धन्ये मैं पिता निरर्थक था
तेरे हित कुछ भी कर न सका
जाना तो अर्थागमोपाय
पर रहा सदा संकुचित काय
लख कर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ समर॥"

पर जिस प्रकार 'राम की शक्ति पूजा' में राम का एक और मन है,

"वह एक और मन रहा राम का जो न थका।"

वैसे ही निराला एक महाप्राण व्यक्तित्व की तरह इन समस्याओं से आगे बढ़ते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है और 'शक्ति की मौलिक कल्पना' कर छायावाद का भी अतिक्रमण कर जाते है। अब वे बेला, नए पत्ते के माध्यम से प्रगतिवाद की ओर अग्रसित होते हैं।

—X—

ठीक है
गहराई लाएं
मॉडल उत्तर देखें

$7\frac{1}{2}$ / 15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "भारत-भारती में निहित नवजागरण चेतना की सीमाओं का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत-भारती को हिन्दी साहित्य में हिन्दी नवजागरण की प्रतिनिधि रचना माना जाता है। बीसवीं सदी के दूसरे दशक में मैथिलीशरण गुप्त ने भारत-भारती की प्रस्तावना में ही व्यक्त किया है कि-

"हम कौन थे क्या हो गए
और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर
ये समस्याएँ सभी।"

इस विचार-पथ पर चलते हुए मैथिलीशरण गुप्त कई स्थानों पर तद्युगीन सीमाओं का अतिक्रमण नहीं कर पाए हैं। यथा-

(क) प्राचीन काल की स्वर्णयुग के रूप में कल्पना करने के कारण वे अंतर्विरोधों को नजरंदाज करते हैं।

(ख) धर्मप्रधान सांस्कृतिक व्याख्या को मानना।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

③ वर्तमान भारत की कई समस्याओं जैसे स्त्रियों की दशा को वे मध्यकाल से जोड़ कर देखते थे।

④ मध्यकाल के सकारात्मक पक्षों की उपेक्षा।

⑤ ब्रिटिश काल की स्थान-स्थान पर प्रशंसा। जैसे गुप्त जी कहते हैं कि ब्रिटिश शासन के रूप में विधाता ने दया कर हमें हमारा कर्मफल प्रदान किया है।

परन्तु इनमें से कुछ प्रशंसाओं और साथ-साथ कम आलोचना का कारण अपनी कृति को पाठकों तक पहुँचाना था। अन्यथा इसे बैन भी किया जा सकता था।

साथ ही यह भी सत्य है कि ये सीमाएँ 'भारत-भारती' की न होकर उस युग की ही हैं।

गुप्त जी ने अपने समय की मुख्य आवश्यकता को भी पहचाना था। वे कहते

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है:-

"जो देश कच्चा माल ही उत्पन्न करके शांत है।
उसका पतन एकांत है सिद्धांत यह निभ्रांत है।"

अतः भारत-भारती की सीमाओं और शक्तियों का साथ-साथ अध्ययन कर ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना श्रेयस्कर है। स्वयं स्वाधीनता आंदोलन में भारत-भारती की भूमिका ही उसके महत्त्व का प्रमाण है।

अच्छा 8/15

Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'राम की शक्ति-पूजा' की उन भाषागत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये जिनके कारण वह काव्यभाषा की दृष्टि से खड़ी बोली हिन्दी की विशिष्ट उपलब्धि मानी जाती है? 20

भाषागत दृष्टि से 'राम की शक्तिपूजा' को खड़ीबोली की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में से एक माना जा सकता है। उसकी भाषागत विशेषताएं निम्नवत हैं:-

(i) समास-क्षमता के प्रयोग से खड़ीबोली को संस्कृत के समान सामर्थ्य मिल गई है-
"विद्धांग बद्ध कोदंड मुष्टि खर रुधिर स्राव"

(ii) इस क्षमता के साथ वर्णों की आवृत्ति और कठोर वर्णों के प्रयोग से निराला ने प्रथम 14 पंक्तियों में राम-रावण युद्ध का सजीव चित्र प्रस्तुत कर दिया है।

(iii) भाषा में नाटकीयता का गुण भी मिलता है. जिससे राम के मन में चलने वाले संशय और अंतर्द्वंद्व पाठक के सम्मुख स्पष्ट होते चलते हैं। जैसे -

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" स्थिर राघवेन्द्र का हिला रहा
फिर-फिर संशय।
रह-रह उठता जीवन में
रावण जय भय।।

अथवा

" अंधकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी तनया कुमारिका छवि अच्युत।>

(iv) नाद-योजना ने राम की शक्तिपूजा को तुलसी की कविता के समक्ष ला खड़ा किया। अनुप्रास की आवृत्ति और तुकांत छन्द के माध्यम से नाद-योजना की सृष्टि की गई है।

(v) संवाद-योजना के माध्यम से निराला ने इस लम्बी कविता को ~~महाकाव्यात्मक~~ महाकाव्यात्मक औदात्य से भर दिया है। जैसे - राम - जाम्बवंत, शिव-पार्वती, राम-शक्ति संवाद। जाम्बवंत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

श्री राम को सुझाव देते हैं:

" शक्ति की करो मौलिक कल्पना
करो पूजन।
छोड़ दो समर जब तक न
सिद्धि हो रघुनंदन।

कथानक के अनुसार संस्कृतनिष्ठ तत्सम भाषा का प्रयोग किया गया है।

अच्छा

11½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) "निराला ने 'राम की शक्ति-पूजा' में अपने समय की आवश्यकतानुसार प्रसंग का चयन, प्रसंग का विस्तार तथा प्रसंग की व्याख्या की है।" इस मत का अनावरण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'राम की शक्ति पूजा' में आधुनिक मानव के संघर्ष को ही प्रक्षेपित किया गया है और राम आधुनिक मानव मन के ही रूपक है। जिस प्रकार आधुनिक मानव मन वर्तमान व्यवस्था की असमानता, भ्रष्टाचार और शक्ति के संकेंद्रण को देखकर बेचैन हो उठता है। इस बेचैनी को कई साहित्यकारों ने अंधेरे से घिर जाने की भावना के समान बताया गया है-

'स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा
फिर-फिर संशय
रह-रह उठता जग-जीवन
में रावण जय-भय'

इसीलिए निराला ने जो प्रसंग लिया है उसका स्रोत कृत्तिवास रामायण है न कि वाल्मीकि रामायण अथवा रामचरितमानस। क्योंकि अन्य महाकाव्यों में तो राम ईश्वर के रूप में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चित्रित हुए हैं, वहाँ इनके मन में न कोई भय है और न कोई संशय।

निराला के राम में संशय भी है और भय भी। फिर वे संशय और भय को पारकर अपने तप (श्रम) से शक्ति की मौलिक कल्पना करता है। यह कल्पना भी मौलिक हो यह जरूरी है क्योंकि समाज की पुरानी संरचनाओं को तो प्रभुवर्ग ने अपने अनुकूल बना लिया है। इसके लिए सिद्धि आवश्यक है।

हनुमान या भक्ति के प्रसंगों को छोड़ दें तो राम की एक बार पुनः परीक्षा और संशय के बाद सिद्धि मिलती है। इसी प्रकार सामान्य मनुष्य की भाँति जब भी राम संशय में होते हैं, उन्हें सीता की याद आती है

- जानकी हाय उद्धार प्रिया का हो न सका।

अंतिम प्रसंग में अपने नेत्र का बलिदान

Copyright -- Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सिद्धि के लिए आवश्यक त्याग का रेखांकन करता है।

अवश्यकतानुसार चयन ने ही इस कविता को वर्तमान में प्रासंगिक बनाया है।

—x—

8/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "कामायनी आधुनिक ढंग का महाकाव्य है।" विचार कीजिये। 15

1935ई में रचित कामायनी में आधुनिकता को कई रूपों में लक्षित किया जा सकता है।

शिल्प के स्तर पर प्रारम्भ करें तो कामायनी में मंगलाचरण का अभाव, दग्धाक्षर से प्रारम्भ होना नवीन छंद और खड़ी बोली के माध्यम से दार्शनिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। कामायनी में आकार की दृष्टि से भी मध्यकालीन महाकाव्यों से अंतर है।

कामायनी में श्रद्धा का नायिका होना भी महत्त्वपूर्ण है। परन्तु और भी महत्त्वपूर्ण है कि कामायनी में अर्थ की कई परतें एक साथ विद्यमान है और ये सभी आधुनिकता का वहन करती हैं। जैसे-

(1) चिंता, आशा, श्रद्धा, काम, वासना, लज्जा से दर्शन, रहस्य, आनंद तक मनोविकारों का

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विकास।

② आधुनिक सभ्यतागत प्रगति का रेखांकन जैसे - मनु व श्रद्धा ग्रामीण परिवेश का सृजन करते हैं जबकि इड़ा - मनु से कहती है :-

"प्रकृत शक्ति तुमने यंत्रों से सबकी छीनी शोषण कर जीवनी बना दी जर्जर झीनी।"

③ आधुनिक सभ्यता का संकट है कि "ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है।"

और समरसता के माध्यम से समाधान प्रस्तुत किया गया है।

④ आधुनिक विचारों का प्रभाव जैसे - गाँधीवाद, सन्यास के समय मनु व श्रद्धा का साथ - साथ रहना (जैसे - परमहंस व अरविन्द)

⑤ मनु का 'उच्छृंखल प्रमादी मनुष्य' से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

एक समरस व्यक्ति के रूप में विकास होता है।

इस प्रकार कामायनी छायावादी चेतना से युक्त एक आधुनिक महाकाव्य है।

अच्छा 8/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) केवल नाराज़ ही नहीं, लड़ता था बाकायदा हमसे कि आप से पढ़े लिखे लोग खाली तमाशबीन ही बनकर बैठे रहेंगे तो इन गरीबों की लड़ाई कौन लड़ेगा? जहाँ दिन-दहाड़े इतना जुलुम होता हो, वहाँ कोई कैसे अलग-थलग बैठकर खाली कागज पोतता रह सकता है।

मन्नू भंडारी के उपन्यास 'महाभोज' में 'मध्यवर्गीय बौद्धिक के अंतःसंघर्ष' को भी मुख्य समस्या के रूप में चित्रित किया गया है।

प्रस्तुत प्रसंग में महेश, मि॰ सक्सेना से बिसू के चरित्र के बारे में कहता है कि बिसू उपेक्षितों-वंचितों पर होने वाले अत्याचार से ग्लानि रहता था। और हम सब से भी प्रश्न करता था कि असमानता से भरे इस समाज में यदि आप जैसे पढ़े लिखे लोग भी हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहे तो कुछ भी नहीं बदलने वाला।

बिसू स्वयं तो परिवर्तन के पक्ष में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खड़ा ही था, वह औरों से भी प्रश्न करता था कि यह व्यवहार क्या उन्हें अंदर से कचोटता नहीं है।

भाषा - सरल-सहज भाषा

शैली - संवाद-शैली

विशेष - मुक्तिबोध के अनुसार भी वे प्रश्न करते हैं कि-

"अब तक क्या किया
जीवन क्या जिया
उदरंभरि बन अनात्म हो गए।

अथवा

"जिंदगी त्रिविक्रम बन गई तलघर।"

अच्छा 5½/10

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रक्खा है, इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनि है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसाद के सम्पूर्ण साहित्य में मानव और प्रकृति के मध्य एक रागात्मक सम्बंध का रेखांकन मिलता है। 'स्कन्दगुप्त' नाटक में देवसेना प्रस्तुत गद्यांश में इसी भाव को व्यक्त करती है।

देवसेना कहती है कि संगीत तो वास्तव में प्रकृति और मनुष्य के तादात्म्य का एक माध्यम भर है। वह प्रकृति के व्यवहार में ही संगीत को प्रस्थापित मानती है। देवसेना कहती है कि परमाणु से लेकर पत्ती, वृक्ष-जल, पक्षियों सभी की शांति और गति में संगीत विद्यमान है।

मनुष्य इस प्रकृति के तादात्म्य से विरह गया है और विलगाव का कारण है ज्ञान से उत्पन्न अहंकार। देवसेना जैसे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

चरित्र वस्तुत: प्रसाद की इस भावभूमि को ही व्यक्त करते हैं जो अतिभौतिकता और ज्ञान के अहंकार को मानवीय ही नहीं अपितु सांस्कृतिक समस्याओं के मूलमें भी देखती है।

भाषा - तत्सम, संस्कृतनिष्ठ

शैली - संवाद, चिंतन

यही भाव 'कामायनी' में भी व्यक्त हुआ है। अंत में प्रसाद कहते भी हैं:-

"समरस थे जड़ या चेतन
सुंदर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती
आनंद अखंड घना था।"

बहुत अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हा! भारतवर्ष को ऐसी मोह निद्रा ने घेरा है कि अब इस के उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान-बूझकर सोता है उसे कौन जगा सकेगा? हा दैव! तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँका उधार लगवाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतेन्दु हरिश्चंद्र हिन्दी नवजागरण के प्रतिनिधि रचनाकार हैं। भारतवर्ष के समृद्ध अतीत के बाद 19वीं सदी के अंतिम दशकों की दशा ने तत्कालीन बौद्धिक वर्ग को उद्वेलित कर रखा था। पश्चिमी ज्ञान और ब्रिटिश-दासता ने इस भाव को और तीव्र किया।

प्रस्तुत गद्यांश इसी मनोदशा को व्यक्त करते नाटक 'भारतदुर्दशा' से उद्धृत है। भारतेन्दु के अनुसार ब्रिटिश साम्राज्य के कुछ सकारात्मक प्रभाव भी थे। विशेषकर पश्चिमी शिक्षा के उपलब्ध होने के बाद भी यदि भारत अशिक्षा, भेदभाव, प्रमाद से न उबरे तो इससे अधिक दुख की बात और क्या होगी।

प्राचीन भारत की गाथा और तत्कालीन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दुरवस्था से यह विषाद भाव और भी तीव्र हो जाता है।

भाषा - सरल - सहज

शैली - प्रवाह शैली (लयात्मपूर्ण)

नवजागरण में यह भाव परवर्ती साहित्यकारों में भी देखा जा सकता है - जैसे मैथिलीशरण गुप्त के यहाँ

"हम कौन थे क्या हो गए और
क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर
समस्याएँ सभी।"

अच्छा

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) ऐसा आतंक आपने कहीं देखा नहीं होगा, साहब! लोगों के घर, ज़मीन और गाय-बैल ही रेहन नहीं रखे हुए हैं जोरावर और सरपंच के यहाँ, उनकी आवाज़ और जबान तक बंधक रखी हुई है। कोई चूँ तक नहीं कर सकता है।

मन्नू भण्डारी ने 'महाभोज' में राजनीतिक संवेदनहीनता का चित्रण किया है। इसमें बिसू की मौत और मुख्यमंत्री दा साहब के मध्य शोषणकारी तत्त्वों की एक शृंखला भी विद्यमान है।

सत्तर के दशक के राजनीतिक परिवर्तनों में जहाँ सत्ता को ग्रामीण वोटबैंक की जरूरत पड़ी, वहीं बाहुबल और पारम्परिक उच्चवर्ग को भी संरक्षण दिया गया। यहाँ जोरावर इसी वर्ग का प्रतिनिधि है, जो परिवर्तनों को स्वीकार नहीं करता। और लोकतंत्र में यह वर्ग अपने अत्याचार को और तीव्र कर देता है।

अपने गुण्डों, बाहुबल और षड्यन्त्र के माध्यम से यह गरीबों की भौतिक सम्पत्ति

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नहीं अपितु पूरे व्यक्तित्व को ही बदल रखे है।

भाषा - सरल - सहज

शैली - संवाद

यह राजनीतिक अवसरवादिता और संवेदनहीनता का प्रमाण है कि एक तरफ लाश पर राजनीति कर वोट बटोरे जा रहे हैं और दूसरी तरफ हत्यारे को संरक्षण भी दिया जा रहा है।

—x—

अच्छा

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) यह तुम नहीं, तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है। स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं कि वह विवेक को ही खा जाए। अखबारों को तो आज़ाद रहना ही चाहिए। वे ही तो हमारे कामों का, हमारी बातों का असली दर्पण होते हैं। मेरा तो उसूल है कि दर्पण को धुंधला मत होने दो। हाँ, अपनी छवि देखने का साहस होना चाहिए आदमी में।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'महाभोज' में दा साहब के चरित्र के माध्यम से मन्नू भण्डारी ने एक मुखौटे का चित्रण किया है।

दा साहब के व्यक्तित्व में कई परतें हैं और वे एक मँजे हुए पर नैतिकताविहीन राजनीतिज्ञों के प्रतीक रूप में सामने आते हैं।

जोरावर जब 'मशाल' पत्र के सम्पादक दत्ता साहब को ठीक कर देने की बात करता है तो दा साहब उसे मीडिया के महत्त्व और लोकतंत्र में उसकी आस्था पर प्रवचन देने लगते हैं। वे कहते हैं कि पत्रकारिता का कार्य हमारी आलोचना के माध्यम से हमें दर्पण दिखाने की तरह है।

पर यह मुखौटे के विचार हैं। यही

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

दा साहब हत्यारे जोरावर को संरक्षण देते है और दत्ता बाबू को लालच देकर पत्रकारिता को खरीद लेते है।

भाषा - सरल -सहज

शैली - संवाद, नाटकीय

——— x ———

अच्छा

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) आपके मत से हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास कौन-सा है और क्यों? 20

बलचनमा, रतिनाथ की चाची से लेकर आधा गाँव तक की परम्परा में "मैला आँचल" को ही हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास माना जा सकता है।

प्रशांत, बावनदास और कालीचरन जैसे पात्रों के होते हुए भी 'मेरीगंज' अंचल ही इस उपन्यास में वास्तविक नायक के रूप में उपस्थित हुआ। प्रस्तावना में रेणु ने कहा भी है कि

"यह है मैला आँचल, एक आंचलिक उपन्यास कथानक है पूर्णिया।"

मेरीगंज को रेणु ने पिछड़े गाँवों के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है। यहाँ जातिगत द्वेष, संघर्ष, अंधविश्वास, साहूकारी, गरीबी, अशिक्षा का वह चित्रण मिलता है जो अन्यत्र दुर्लभ है। डा. प्रशांत कहता है.

"गरीबी और जेहलत इस रोग के दो कीटाणु हैं"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजनैतिक रूप से संघ, कांग्रेस, सोशलिस्ट सभी का एक कैरीकेचर मौजूद है। निचले स्तर की वास्तविकता भी यदी है वही धार्मिक स्तर पर कबीर मठ का भी चित्रण है।

बल्कि आंचलिकता का निर्वहन इन विश्लेषणों में कम हुआ है। रेणु ने मेरीगंज के नदी, नाले, खेत-खलिहानों से पाठकों को भलीभांति परिचित किया है।

यहाँ बिदापत नाच, सुरंगा सदाबृज व जाट-जटिन का नृत्य, लोककथाएं व लोकरंग मौजूद है वहीं संगीत-गीत के साथ-साथ अंग्रेजी शब्दों का ग्रामीणीकरण भी हुआ है जैसे- टीशन, मैंसचरमन बाबू आदि।

इन प्रविधियों से पूरा अंचल ही चित्र रूप में जीवंत हो उठा है और इसी अर्थ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में मैला आँचल हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक प्रयास है।

अच्छा प्रयास

भाषा पर भी लिखें

10½/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राजनीति और अपराध के आपसी संबंधों की औपन्यासिक प्रस्तुति के रूप में 'महाभोज' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महाभोज में राजनीति और अपराध का व्यापक और जटिल गठजोड़ दिखाया गया है।

पृष्ठभूमि - 1970 के दशक में राजनीति को गाँवों की तरफ मुड़ना पड़ा और वोटबैंक को सँभालने के लिए बाहुबल का सहारा लिया गया।

महाभोज में दा साहब व सुकुल बाबू - दोनों के पास अपना - अपना अपराधी तंत्र मौजूद है। वे जोरावर की न सिर्फ रक्षा करते हैं बल्कि और निर्दोषों को उसकी बलि चढ़ा रहे हैं।

इस प्रकार राजनीति और अपराध का यह गठजोड़ लोकतंत्र रूपी लाश को नोच-नोचकर खाते हैं। इस महाभोज में पुलिस (DIG सिन्हा), मीडिया (महाजन - दत्ता बाबू) व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विपक्ष - सभी सम्मिलित है।

बिंदा व सम्मेला की खतरनाक परिस्थिति इस गठजोड़ को तोड़ने के लिए आज भी खतरनाक है।

अन्धा प्रभाव और गहराई लाएँ

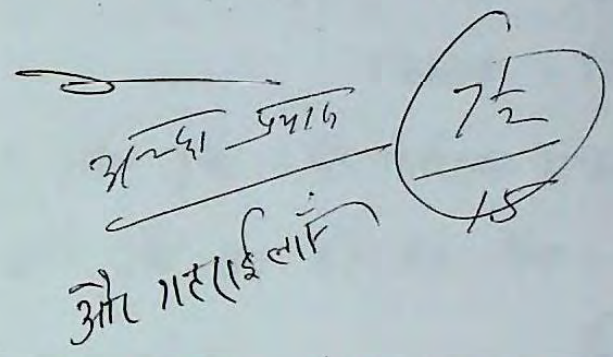

7½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास के नारी-चिन्तन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिव्या उपन्यास में पारंपरिक वर्गों की दृष्टि से नारी के प्रति विभिन्न दृष्टिकोणों को दिखाया गया है

ब्राह्मण - प्रेस्थ, वृद्ध
कुलनारी - रुद्रधीर
निर्वाण में सहयोगी नहीं - बौद्ध भिक्षु व पृथुसेन

यहाँ तक कि एक बौद्ध भिक्षु का वचन है कि 'वेश्या स्वतंत्र नारी है' इति।

परन्तु उपन्यासकार ने इसके माध्यम से नारी की दयनीय दशा, शोषण को व्यक्त कर एक मानवीय आकांक्षा व्यक्त की है जहाँ दिव्या व मारिश आश्रय का आदान-प्रदान चाहते हैं।

→ गहराई अपेक्षित

5/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation